

२१/३/२५

पतावली परा दुर्ग / अधि. प्राची मय प्राची अनुपारम्भित।  
अधि. विपरी उपा / अधि. प्राची मय प्राची को स्विक-रुत  
कर तीस बार आचार्य फिलवारि गति। स्विक सौम 5 PM  
हो युगा है। कृतः प्राची मय अधि. प्राची के अनुपारम्भित  
रहने पर प्राची का प्रथम-पत्र अक्षय हालरी / अक्षय पंथी  
में स्विक्रित किया जाता है। पतावली के मूल शुक्र (होम) ८  
तम्बर से कम हो।

निर्णय खुले जिनमाल सुवादा गिदा ।

